हैलो दोस्तों,

मेरी पहली कहानी में आपने पढ़ा कि मेरी सेक्सी मां मीरा ने किस तरह मुझे सेक्स करना सिखाया । बहुत से ईमेल मिले। सबको मेरी कहानी बहुत पसंद आई। एक बार सेक्स करने के बाद मैं मां को मीरा ही कहने लगा। वह भी मेरा ख्याल अपने पति की तरह रखने लगी । एक दिन मैंने उससे पूछा कि क्या तुम्हारे मेरे अलावा भी किसी से शारीरिक संबंध है?तो मां ने मुझे एक थप्पड़ जड़ दिया और बोली तेरे साथ क्या सो गई तूने मुझे रंडी समझ लिया। जा निकल जा इस घर से और अब मत आना। यह सुनकर मुझे अपने आप पर शर्म आई कि मैंने यह सवाल क्यों किया ?दिन भर मैं घर के बाहर घूमता रहा । शाम को मैंने मां के लिये एक नई साड़ी लेकर आया और मां को गले से लगा लिया। मां यह देखकर सारा गुस्सा भूल गई और मेरे होंठों को चूम लिया। उस रात मैंने उसकी तबियत से चुदाई की।

मैं आरती को भी चोदना चाहता था। मां ने मुझे एक प्लान बताया। मैं अगले दिन सुबह आरती को मिला और उससे कहा कि आज मेरा जन्मदिन है तुम पार्टी में जरूर आना। आरती ने पहले बहुत मना किया पर मैंने उसे तैयार कर ही लिया।

शाम को 7:00 बजे मैं और मां तैयार हो गये। मां गुलाबी रंग की साड़ी में कयामत ढा रही थी। थोड़ी देर बाद आरती एक गिफ्ट लेकर मेरे घर आई। अंदर आने पर उसने देखा कि मेरी मां और मेरे अलावा कोई नहीं है। मैंने आरती का परिचय मां से करवाया। मां ने आरती को देखा और उसके गालों पर हाथ रखकर उसके माथे को और दोनो गालों को चूम लिया। आरती थोड़ा शरमाई पर उसे अच्छा लगा। मां बोली आरती तुम तो बहुत सुदर हो। आरती धीरे से मुस्कुराई और बोली आंटी आप भी बहुत सुंदर और आपकी यह गुलाबी साड़ी भी अच्छी लग रही है। पर आंटी पार्टी में और कोई नहीं हैं?मां बोली – हां बेटी, बबलू के पिता की मौत के बाद हम पहली बार जन्मदिन मना रहे हैं। तुम उसकी अच्छी दोस्त हो इसलिये सिर्फ तुम्हें बुलाया है। फिर मैंने केक काटा और एक एक पीस आरती और मां को खिलाया। मैंने उन दोनो का झूठा पीस खुद खा लिया। फिर मैंने जानबूझकर गिलास का पानी गिरा दिया जिससे आरती के कपड़े भीग गये। मैंने धीरे से सॉरी कहा तो आरती ने कहा कोई बात नहीं बबलू। इट्स ओ.के.। लेकिन मां नहीं मानी वह आरती को बोली – नहीं आरती । भीगे कपड़ों में रहना अच्छा नहीं है। थोड़ी देर के लिये तुम मेरी साड़ी पहन लो। कपड़े कुछ देर में सूख जायेंगें तो वापस पहन लेना। आरती थोड़ा हिचकिचाई – नहीं आंटी। रहने दीजिए। थोड़ी देर में ऐसे ही सूख जायेंगें।

मां नहीं मानी और आरती को अपने कमरे में ले गई। कमरे में ले जाकर मां ने अपनी साड़ी खोल दी। आरती सकपकाई और बोली – आंटी आप अपने कपड़े क्यों खोल रही हैं?मां बोली – आरती तुम्हें मेरी यह गुलाबी साड़ी पसंद हैं न। तुम यह पहन लो मैं दूसरी साड़ी पहन लूंगी। कहते कहते मां ने पूरी साड़ी खोल दी। मां ने अपना गुलाबी ब्लाउज और पेटीकोट भी खोल दिया और बोली – अब मैचिंग ठीक रहेगा। आरती मां को ब्रा और पेंटी में देखकर बोली – आंटी आप तो आज भी बहुत सुंदर और सेक्सी लग रही हो। मां भी तुरंत बोली – आरती तुम भी बहुत सुंदर और सेक्सी हो। चलो जल्दी से अपने कपड़े खोलो और मेरी साड़ी पहन लो। आरती शरमाते शरमाते अपने कपड़े खोलने लगी। अब वह केवल ब्रा और पेंटी में ही थी। यह देखकर मां फिर बोली – वाह आरती, तुम्हारे बूब्स तो बहुत शानदार हैं। तुम तो कमाल की सेक्सी लड़की हो। तुम्हें देखकर तो कोई भी अपनी बाहों में भरना चाहेगा। अपनी तारीफ सुनकर आरती शरमाई और बोली – पर आंटी आप भी तो कम नहीं हो। मां आरती के पास गई और आरती से चिपक कर खड़ी हो गई। मां के चिपकते ही आरती को जैसे करंट लगा हो। उसकी सांसे तेज हो गई। मां ने आरती के कंधे पर हाथ रखा और कहा – तुम्हारा फीगर इतना अच्छा है मैंने सोचा भी नहीं था। क्या कभी किसी लड़के से संबंध बनाया हैं?आरती बोली – नहीं आंटी मैंने ऐसा कुछ नहीं किया और बबलू भी सिर्फ मेरा अच्छा दोस्त है। मां बोली – तुम्हें पता है कि सेक्स कैसे करते हैं?आरती ने जवाब दिया – नहीं । पर थोड़ा बहुत जानती हूं। मां बोली – चलो मैं तुम्हें सिखाती हूं सेक्स कैसे करते हैं और अपने पति को कैसे खुश रखा जाता है?

आरती थोड़ा खुल गई थी पर अब भी ऐतराज कर रही थी । मां बोली – घबराओ मत आरती, मेरे साथ बिस्तर पर आओ। यदि तुम्हें सेक्स करना नहीं आयेगा तो तुम अपने पति को कैसे खुश रखोगी और फिर इतना तो मालूम होना ही चाहिए न कि सेक्स में क्या होता है?आरती बोली – ठीक हैं आंटी। आप ही बताओ कि सेक्स में क्या क्या करते हैं?आरती भी थोड़ा बहुत उत्तेजित हो गई थी और वह यह जानना चाहती थी कि आखिर सेक्स में करते क्या हैं?

मां ने आरती को बिस्तर पर लिटा दिया और खुद आरती के उपर चढ़ गई। उसने एक हाथ से आरती के बालों को खोल दिया और उसके सिर पर, गालों को चूमते हुए आरती के होंठों को धीरे से अपने मुंह में लिया और चूसने लगी। आरती को अजीब सा आनंद आ रहा था। उसने अपने हाथ मां की पीठ पर रख दिये। बहुत देर तक होंठों को चूसते हुए मां ने आरती की गर्दन को चूमना चालू किया। धीरे धीरे मां उसकी चूचियों तक पहुंच गई। मां ने आरती की ब्रा खोल दी। आरती के बूब्स पूरी मस्ती में चमक रहे थे। मां ने चूचियों को अपने मुंह में भर लिया। आरती कराहने लगी। वह आहहहहहह आहहहहह करने लगी। मां ने चूसना चालू रखा। फिर धीरे धीरे आरती के पेट पर, नाभि को चूमते हुए पेंटी को खोला और अपना मुंह आरती की चूत में दे दिया। मां आरती की चूत को जीभ अंदर बाहर करते हुए चूसने लगी। आरती पर अजीब सा नशा छा गया। वह कहने लगी – आहहहहहहहह आंटी आप यह क्या कर रही हो?मां बोली – आरती, मर्द लोग ऐसे ही उपर से चूमते हुए नीचे तक आते हैं और औरत की चूत को चूसते हैं। इस तरह मां ने आरती के पूरे बदन को चूमा। आरती मां से पूरी तरह चिपक गई और मां के होंठों को चूमने लगी। उसे बहुत मजा आ रहा था। उसने मां की ब्रा खोली और चूसने लगी। मां ने जिस तरह उपर से नीचे तक

(C) 2008, All rights reserved with www.antarvasna.com. NOT for Minors (below 18)

चूमा और मां की चूत को चूसने लगी। मां भी चूत उछाल उछालकर आरती के मुंह में दे रही थी। मां ने आरती को की पोजिशन में होने को कहा और दोनों एक दूसरे की चूत को मजे ले लेकर चूसने लगी। थोड़ी देर में आरती का पानी निकला जिसे मां पूरा का पूरा चाट गई। आरती ने भी उसी तरह मां की चूत से निकाल पानी चाट लिया। थोड़ी देर बाद दोनो एक दूसरे से चिपक गई और एक दूसरे के होंठों को चूसकर चटनी बना रही थी। मां ने अपनी एक उंगली आरती की गांड में डाल दी। आरती दर्द से कराहने लगी और उसने भी मां की गांड में उंगली डाल दी। दोनो ही तड़प रही थी फिर भी मजे से एक दूसरे के होंठों का रस पी रही थी। मां ने आरती की गांड में से उंगली निकालकर आरती की चूत में डाल दी। आरती की आग और भड़क गई। दोनो इस कदर लिपटी हुई थी जैसे दूसरे के शरीर में ही घुस जायेंगी। थोड़ी देर बाद दोनो थककर लेट गई।

कमरे के बाहर मैं यह देखकर पसीने पसीने हो रहा था। शायद मां ने जानबूझकर दरवाजा थोड़ा सा खुला रखा था। उनकी रास लीला देखकर मेरे लंड ने भी एक बार पानी छोड़ दिया। मैं सोच रहा था कि आरती को मैं अपने चोदने के लिये लाया था और यहां तो मां ही उसे चोद रही हैं। मैंने देखा कि मां आरती को अपनी गुलाबी साड़ी पहना रही हैं और खुद के लिये दूसरी साड़ी निकाली। मैं वापस हॉल में आ गया। पर उन दोनो का खेल मेरे दिमाग में ही घूम रहा था ।

हम तीनो ने मिलकर खाना खाया। मां ने आरती को छुट्टी के दिन आने को कहा और आरती मान गई। खाना खाने के बाद आरती ने अपने कपड़े पहने और मैं आरती को छोड़कर वापस घर आया। रास्ते भर दोनो ही खामोश रहे। घर आकर मैंने मां से पूछा तो वो बोली – पता नहीं मुझे क्या हो गया था। आरती जैसी लड़की को देखकर मैं खुद को नहीं रोक पाई। पर तुम चिंता मत करो। मैंने उसमें सेक्स की आग भड़का दी है। छुट्टी के दिन आयेगी तो तुम उसे चोद लेना। मैं उसे पूरी तरह तैयार कर दूंगी। चल जल्दी से कपड़े खोल और चालू हो जा। उसने भी मेरी चूत में उंगली कर दी है और अब मैं बिना तुम्हारा लंड लिये सोने वाली नहीं हूं। यह कहकर मां ने मेरे होंठों को चूम लिया। मैंनें दरवाजा बंद किया और मां को उठाकर बेडरूम में ले आया। मां ने मेरे और मैंने उसके कपड़े खोल दिये। दोनो पूरे नंगे हो गये। मैंने मां को धक्का देकर बिस्तर पर गिराया और उनके उपर आकर उसकी चूत पर लंड से निशाना लगाया। एक ही धक्के मे लंड पूरा अंदर चला गया। मां जोर से चीखी – आहहहहहहहह मार ही डालेगा क्या?मैंने एक भी नहीं सुनी और तेज धक्के देते गया। थोड़ी देर बाद चूत का पानी निकल गया और मैंने भी अपना माल चूत में डाल दिया।

कुछ दिन मैंने आरती के ख्यालों से ही निकाल दिया कि कब उसे चोदने का मौका मिलेगा?छुट्टी के दिन मां और मैं घर पर ही थे। तभी घंटी की आवाज आई। मैंने दरवाजा खोला तो आरती खड़ी थी। वह बहुत सज धजकर आई थी। उसे देखकर मैं मुस्कुराया। अंदर आने पर आरती ने मां से पूछा – कैसी हो आंटी?मां बोली – मैं ठीक हूं बेटा। खुशी हुई कि तुम फिर मिलने आई हो। मां ने फिर आरती के गालों पर चुंबन जड़ दिये पर आरती इस बार शरमाई नहीं बल्कि आनंदित हो रही थी। थोड़ी देर बात करने के बाद मां आरती को अपने बेडरूम में ले गई। पिछली बार की तरह इस बार भी मां ने हल्का सा दरवाजा खुला रखा ताकि मैं उनका नजारा ले सकूं।

दोनों बेडरूम में जाते ही एक दूसरे से चिपक गई। इस बार आरती कुछ ज्यादा ही मूड में थी। उसने मां को बाहों में लिया और चुंबनों की बौछार कर दी। धीरे धीरे दोनो ने एक दूसरे के कपड़े उतार दिये। पांच मिनट में ही दोनों पूरी नंगी हो गई और एक दूसरे की चूत में जीभ डालकर चूसने लगी। जब तक दोनो की चूत से पानी नहीं निकला दोनो एक दूसरे की चूत को चूसती रही। चूत चूसने के बाद आरती ने मां के मम्मों को दबाया और चूचियों को मुंह में लेकर चूसती रही। कुछ देर बाद दोनो एक दूसरे से लिपटकर लेट गई। मां ने आरती से पूछा – तुम्हें मजा आया कि नहीं। आरती मुस्कुराते हुए बोली – हां, बहुत मजा आया। पता नहीं आपने क्या जादू कर दिया है कि मैंने किसी मर्द के बजाय तुमसे संबंध बना लिये। तुमसे सेक्स करके मुझे बहुत मजा आया है। मां ने हंसते हुए आरती के होंटों को जोरदार चुम्मा लिया और आरती की चूत में उंगली करते हुए कहा – तुम्हें और मजा चाहिए तो किसी मर्द के लंड को अपनी चूत में डलवाना होगा। आरती सिसकते हुए बोली – लेकिन आंटी मैंने सुना है कि लंड को चूत में डालने से बच्चा हो जाता है। मां बोली – तू चिंता मत कर आरती। मैं तुझे बर्थ कंट्रोल की गोलियां दे दूंगी तुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। शादी के पहले अनुभव हो जाये तो शादी के बाद दिक्कत नहीं आती है। यह सुनकर आरती बोली – वो तो ठीक है आंटी पर मर्द कहां से लाओगी?मां बोली – आरती मर्द तो अपने घर में ही है। मैं बबलू को बुलाकर लाती हूं। आरती बोली – पर बबलू तो मेरा अच्छा दोस्त है। वह पता नहीं मेरे बारे में क्या सोचेगा?

तू चिंता मत कर मैं बाहर जाती हूं और उसे भेजती हूं। मां नंगी ही बाहर जाने लगी तो आरती ने टोका – आप ऐसे ही बाहर जाओगी। अपने बेटे के सामने शर्म नहीं आयेगी ?

अरे तू घबरा मत हम दोनो को एक दूसरे के सामने नंगे होने में शर्म नहीं आती। मैं उसे भेजती हूं। यह कहकर मां बाहर आ गई जा मैं अपने कपड़े उतारकर नंगा ही खड़ा था और अपने लंड को रगड़ रहा था। मां बोली – बबलू लंड रगड़ना बंद कर और अंदर जाकर आरती को चोद दे और हां प्यार से चोदना वह पहली बार चूत में लंड लेगी। बहुत दर्द होगा उसे।

(C) 2008, All rights reserved with www.antarvasna.com. NOT for Minors (below 18)

मैंने हां में सिर हिलाया और नंगा ही अंदर घुसा। आरती ने मुझे नंगा देखा तो वह चौंक गई। उसे इसकी उम्मीद नहीं थी पर वह भी मेरे लंड का मजा लेना चाहती थी। उसका मुंह खुला का खुला रह गया। मैंने जाकर उसे खुले मुंह को अपने मुंह में भर लिया और होले–होले चूसने लगा। वह भी मेरा साथ देने लगी। साथ ही साथ नीचे मेरे लंड को देख रही थी जो तनकर खड़ा था। मैं धीरे धीरे उसके पूरे बदन को चूमने लगा। उत्तेजना के कारण वह मेरी नंगी पीठ पर हाथ फिरा रही थी। उसने आंखे बंद कर ली। मैं उसकी चूचियों को मुंह में लेकर चूसने लगा। उसके मुंह से सिसकारियां निकल रही थी। बहुत देर चूचियों को चूसने के बाद जब मैंनें उसकी नरम मुलायम गुलाबी झांटो से रहित चूत पर मुंह लगाया तो एक सरसरी सी उसके पूरे बदन में दौड़ गई। एक अजीब सा नशा उसके ऊपर छाने लगा। वह पागल सी हो रही थी। मैंने चूत को चूसकर उसे और पागल कर दिया। थोड़ी देर बाद वह झड़ गई। मैंने उसकी चूत में दो उंगलियां डालकर अंदर बाहर करने लगा। वह तड़पने लगी। उसका रस मेरी उंगलियों पर से रिसने लगा। मैंने सोचा यह सही मौका है लंड डालने का। उसका रस निकलने के कारण उसे ज्यादा तकलीफ नहीं होगी और लंड आराम से अंदर जायेगा। मैंने लंड चूत के मुंह पर रखा और धक्का दिया। आधा लंड उसकी चूत में घूसने के साथ ही वह जोर से चीखी। मैं नीचे झुका और उसके होंठों को अपने होंठों से दबा लिया। फिर मैंने एक दो धक्के और मारे। चूत बहुत ही टाईट थी पर रस निकलने के कारण लंड आराम से उसकी सील को तोड़ते हुए अंदर तक चला गया। वह दर्द से कराह रही थी। मैंने धीरे धीरे अपना लंड अंदर बाहर करना चालू किया। उसका दर्द कुछ कम हुआ। उसे मजा आने लगा। थोड़ी देर बाद मैंने अपनी स्पीड तेज की तो वह भी चूत उछाल उछालकर मेरा साथ देने लगी। हम दोनो ही पसीने से तर हो गये थे लेकिन लगे रहे। उसने फिर अपना पानी छोड़ा और मैं भी सारा पानी उसकी चूत में छोड़कर उसके उपर लेट गया। मैंने लंड को बाहर निकाला तो लंड उसके रस और खून से सना हुआ था। आरती उसे देखकर डर गई और रोने लगी। आरती का रोना सुनकर मां जो दरवाजे के बाहर हमारी चुदाई देख रही थी अंदर आई। आरती मां से चिपक गई। मां ने आरती की समझाया कि पहली बार ऐसा होता है। इसमें चिंता की कोई बात नहीं है। अब तुम्हें कभी तकलीफ नहीं होगी।

थोड़ी देर बार आरती जाने का कहने लगी तो मां ने कहा पहले तुम नहाकर फ्रेश हो जाओ और फिर चली जाना। हम तीनो एक साथ ही नहाते हैं। आरती यह सुनकर फिर चौंकी – आप बबलू के साथ नंगी नहा भी सकती हैं। यह सुनकर मां बोली – नहा भी सकती हूं और चुदवा भी सकती हूं। बबलू और मेरे बीच कोई दूरी नहीं है। आरती सोच भी नहीं सकती थी कि हम दोनो के रिश्ते कैसे हैं?लेकिन अब वो वह पूरी तरह हमसे घुल मिल गई थी इसलिये कुछ नहीं बोली। हम तीनो बाथरूम में गये और शॉवर के नीचे नहाना शुरू किया। मां ने मेरा लंड मुंह में लिया और चूसने लगी। आरती बोली – यह आप क्या कर रही हैं आंटी। क्या लंड को मुंह में भी लेते है। मां बोली – क्यों नहीं आरती। जब चूत मुंह में ले सकते हैं तो लंड क्यों नहीं और तो और इनका माल भी पीते हैं जो औरतों के लिये बहुत पौष्टिक होता है। तुम भी चूसो न। आरती ने फिर से मेरे लंड को पानी से साफ किया और मुंह में लेकर चूसने लगी। उसे मजा आने लगा। वह बोली – वाह आंटी लंड चूसने में भी बहुत मजा आता है। वह लॉलीपोप की तरह मेरे लौंड़े को चूसने लगी। कुछ देर बाद मैं उसके मुंह में झड़ गया। उसने मां की बात मानी और मेरा माल चूस गई। मां ने फिर मेरा लंड मुंह में लिया। मेरा लंड फिर से तन गया। इस बार मैंने मां को घोड़ी की स्टाइल में बिठाया और उसकी गांड में लंड डालकर अंदर बाहर करने लगा। आरती एक के बाद एक स्टाइल देखकर चौंक रही थी। उसे मजा भी बहुत आ रहा था। गांड को जी भरकर चोदने के बाद सारा माल गांड में ही डाल दिया।

अब मैं आरती की भी गांड में लंड डालकर चोदना चाहता था पर मां ने मना कर दिया और बोली कि – अभी नहीं बबलू अगली बार वरना उसे बहुत परेशानी होगी। मां की बात सुनकर मैंने आरती की गांड के बदले चूत में लंड डालकर चोदना चालू किया। उसे पानी में भीगते हुए चुदवाना बहुत पंसद आया। इस तरह चोदते और चुदवाते हम नहाकर बाहर निकले। हम तीनो के चेहरे खिले हुए थे।

दोस्तों आपको यह कहानी कैसी लगी। मेरे ईमेल आईडी पर मेल करके जरूर बताईयेगा। मेरा ईमेल आईडी है – mr.deewana_tera@rediffmail.com

वापस जाने के लिए क्लिक करें (http://www.antarvasna.com)

(C) 2008, All rights reserved with www.antarvasna.com. NOT for Minors (below 18)